विचार बिन्दु

गरीबों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है। –सरदार वल्लभभाई पटेल

उदयपुर को स्वच्छता पुरस्कार, पुरस्कार का मज़ाक है

हाल ही 5 अक्टूबर को राजस्थान पत्रिका में उदयपुर को क्षेत्र में स्वच्छता का प्रथम पुरस्कार दिया जाने का समाचार पढ़कर आश्चर्य हुआ। साथ ही तरस आया चयनकर्त्ताओं की प्रक्रिया पर। यदि उदयपुर प्रथम है तो अन्य शहरों की क्या दुर्दशा होगी यह भी विचार आना स्वाभाविक है। आखिर क्या मापदण्ड हैं स्वच्छता के। क्या यह केवल कोई सीमित क्षेत्र दिखाये जाने का परिणाम है या अच्छी आवभगत का, यह भी समझ में नहीं आया। यह भी विचारणीय है कि क्योंकि केन्द्रीय सत्ता व नगर निगम उदयपुर एक ही दल के हैं यह निर्णय लिया गया। केन्द्रीय चयन दल ने देश में उदयपुर को 60वां स्थान दिया है, जबकि पूर्व में 300 से भी नीचे था। उदयपुर का नागरिक होने के नाते नगर निगम की घोर लापरवाही, अव्यवस्था व संवेदनहीनता का लेखक साक्षी है।

नगर निगम का प्रमुख कार्य नगर की स्वच्छता का है। हाँ, कचरा गाड़ी मोहल्लों में ज़रूर घूमती है। अभी भी कई नागरिक पूर्ववत सड़क पर कूड़ा-कचरा डाल रहे हैं। वाहन पर चालक के अतिरिक्त एक सहायक रहता है, परंतु वह सीट से उतर कर सहायता करने के बजाय मूक दर्शक बना अपनी सीट नहीं छोड़ता। कई बार पार्षद के ध्यान में लाया गया परंतु सुधार न होने से जो वाहन में कचरा डालने में असमर्थ हैं, उन्हें अत्यंत असुविधा होती है। वोट बैंक में कमी के डर से अभी तक सड़क पर कचरा डालने वालों पर जुर्माना नहीं किया जाता अत: दुष्प्रवृत्ति वृद्धि पर है। गहरी नालियाँ कूड़ादान बनी हुई हैं। नागरिक व सफाई कर्मी दोनों ही उसके लिये ज़िम्मेदार हैं। सड़ाँध रहती है और मच्छरों की भरमार है। इन नालियों को ढँकने अथवा स्वच्छता रखने की योजना पर नगर निगम का कोई ध्यान नहीं है।

वर्षों पूर्व की तरह कचरे व कीचड़ के नारकीय व वीभत्स ढेर अभी भी हर मोड़ पर लगे रहते हैं। शहर के बाहर विकसित हो रहे क्षेत्र का जैसे कोई उत्तर दायित्व ही नहीं है। कोलोनी में व सड़क के दोनों ओर चारों तरफ कचरा ही कचरा पसरा रहता है। कचरे के पहाड़ बनते जा रहे हैं, उसके निस्तारण की कोई योजना नहीं है। कुल मिलाकर गंदगी, कीचड़ व कूड़े के ढेर बरकरार हैं। जब तक घर-घर से कचरा पात्र लेने की व्यवस्था नहीं होती यह दुर्दशा बनी रहेगी। नागरिकों को शिक्षित करने के साथ दण्डित करना भी आवश्यक है। एक पक्ष और है। एक तरफ घर और बाहर उपलब्ध स्थान पर पेड़ लगाने का अभियान है तो दूसरी ओर वृक्षों की कतरन को एक किलोमीटर के स्थान पर पहुँचाने का आदेश है। बताइये आम नागरिकों के पास क्या साधन है कि वे चाहते हुए भी इतनी दूर तक वृक्षों की कतरन पहुँचा दें। यह तो आवश्यक है कि उसे अपने-अपने घरों के सामने न डाल कर किसी निकट के केन्द्रीय स्थान तक पहुँचा दें, जहाँ से नगर निगम ही निस्तारण करे। वृक्षों के रोपण को प्रोत्साहन हेतु यह व्यवस्था आवश्यक है। उसके अलावा बिजली विभाग भी वृक्षों की छँटाई करता है और उसका निस्तारण भी करना ही होगा।

उदयपुर में भव्य इमारतें, होटलें व भव्य माल बन रहे हैं, उनकी चमक-दमक है परंतु भीतर से खोखला है। राजस्थान का हर नगर सभी दृष्टि से उपेक्षा का शिकार है। जोधपुर की सड़कों की खस्ता हालत सोशल मीडिया पर हँसी का निमित्त है। हर मोहल्ले में कुत्तों की बेतहाशा वृद्धि और हर मार्ग व चौराहे पर आवारा पशुओं के कारण दुर्घटनाओं से हर शहर पीड़ित है।

स्मार्ट सिटी के नाम पर सीवरेज का काम प्रारंभ हुआ था। वह अभी भी आधा-अधूरा पड़ा है। अधिकांश सड़कें खुदी पड़ी हैं। सीवरेज कई जगह असफल रहा है। कई स्थानों पर नागरिकों के पाइप बंद हो जाने के कारण पाइप तोड़ दिये हैं। कई जगह उसकी निकासी का मार्ग ही नहीं है और वह अंतिम छोर पर उफन रहा है। कई मोहल्लों में आधे घरों में ही काम करके कार्य छोड़ दिया गया है। कुल मिलाकर सीवरेज व्यवस्था पूर्णत: अस्त-व्यस्त हैं।

सड़कों की कभी ऐसी बदहाली नहीं थी जैसी अभी है। अधिकांश सड़कों पर गहरे खड्डे बन गये हैं। जनरल हॉस्पिटल तथा विश्वविद्यालय मार्ग जैसी महत्वपूर्ण सड़कें भी पूर्णत: अस्त-व्यस्त हैं। इस शहर ने सीवरेज के नाम पर जो नर्क भागा है और भोग रहा है वह वर्णनातीत है। शिकायतों के प्रति नगर निगम पूर्णत: उदासीन है। इंजीनियरों की पूरी टीम है परंतु वह निष्क्रिय व निष्प्रभावी है, अक्षम व अकर्मण्य है।

सामुदायिक केन्द्र उपेक्षा के शिकार हैं। वर्तमान में पदासीन नगर निगम के जनप्रतिनिधि ने 3-4 वर्ष पूर्व भी जिस सामुदायिक केन्द्र के जीर्णोद्धार का आश्वासन दिया था उसके लिये विधायक मद से 4-5 लाख रुपये की राशि स्वीकृत कराने के बावजूद कार्य पूरा नहीं हुआ है। कहीं लीकेज है तो कहीं सीवरेज टूटा पड़ा है। पार्क बदहाल हैं। नये पार्क का ज़ोर शोर से उद्घाटन होता है और पुराने उपेक्षा के शिकार हैं। न पेड़-पौधे हैं और न दूब। जंगल का नज़ारा है। भ्रमण पथ बन गया तो मिट्टी भरने का काम शेष है।

सड़कों की बिजली की व्यवस्था भी नगर निगम के पास है। वही पुरानी जर्जर व्यवस्था है। तारों का जंजाल है। कई-कई सप्ताह स्ट्रीट लाइट बंद रहती है। कोई दिन में जलती हैं और रात्रि को बंद रहती हैं। खंभे टूटे हैं तो कहीं खंभे ही नहीं हैं और अँधेरा बना रहता है।

जलापूर्ति शोचनीय है। पाइप लाइन पुरानी हैं, टूटी-फूटी रहती हैं अपर्याप्त हैं। झीलें लबालब हैं परंतु पानी की पूर्ति अपर्याप्त है। पानी का दबाव अत्यंत कम है और पानी की मात्रा बहुत कम रहती है। झीलें प्रदूषित हैं।

उदयपुर झीलों की नगरी कहा जाता है। झीलों की दुर्दशा पर समाचार पत्रों से स्थिति सबको ज्ञात है। हाइकोर्ट के आदेश के बावजूद होटल मालिकों को लाभ पहुँचाने के लिये असंख्य पेट्रोल-डीज़ल है। इस प्रकार जल-व्यवस्था भी किसी भी प्रकार संतोषजनक नहीं कही जा सकती।

शहर की बदसूरती को बढ़ाने में अतिक्रमण व ट्राफिक की अव्यवस्था प्रमुख है। सड़कें अगर कहीं चौड़ी भी हुईं तो दोनों ओर के अतिक्रमण से छोटी व संकीर्ण हो जाती हैं। झीलों के किनारे सारे शहर में अतिक्रमणों की भरमार है। रिहायशी मकान, होटलें, दुकान सभी में अतिक्रमण की होड़ लगी है। कुल मिलाकर मछली बाज़ार जैसी स्थिति सर्वत्र दिखाई देती है। अधिकांश अतिक्रमणों को नज़रअंदाज़ किया जाता है या उन पर जुर्माना करके नियमित कर दिया जाता है अत: अतिक्रमणों को प्रोत्साहन है। ट्रेफिक, यातायात एवं पार्किंग को अनुशासित व व्यवस्थित करने हेतु मात्र कभी-कभी श्मशानी वैराग्य पुलिस दिखाती है, अन्यथा वह घोर उपेक्षा का शिकार है।

उदयपुर में भव्य इमारतें, होटलें व भव्य माल बन रहे हैं, उनकी चमक-दमक है परंतु भीतर से खोखला है। राजस्थान का हर नगर सभी दृष्टि से उपेक्षा का शिकार है। जोधपुर की सड़कों की खस्ता हालत सोशल मीडिया पर हँसी का निमित्त है। हर मोहल्ले में कुत्तों की बेतहाशा वृद्धि और हर मार्ग व चौराहे पर आवारा पशुओं के कारण दुर्घटनाओं से हर शहर पीड़ित है। नागरिकों के चारों ओर असुविधाएँ ही असुविधाएँ हैं। हर संबंधित विभाग व नगर निगम पानी, बिजली, सड़क, सीवरेज व भूमि का टेक्स वसूल करता है, देर होने पर जुर्माना करता है परंतु नागरिक की असुविधा से बेखबर है।

अच्छा होता कि क्षेत्र में सबसे अधिक या कम बदहाली के पुरस्कार दिये जाते। उदयपुर को क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार दिया जाना अन्य नगरों की घोर बदहाली का सूचक है और पुरस्कारों के मज़ाक उड़ाने का निमित्त भी।

–अतिथि सम्पोदक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

मन हूम हूम करे : मन और उसका विज्ञान

मानव मस्तिष्क गजब का जीवित कंप्यूटर है जो जीवन की पहली सांस के साथ कार्य करने लगता है और जीवन की आखिरी सांस तक किसी न किसी सीमा तक कार्यरत रहता है। यहां तक कि जब हम गहरी नींद में होते हैं तब भी मस्तिष्क कुछ न कुछ करता ही रहता है।

मस्तिष्क का एक अपरिभाषित व्यक्तिपरक (सब्जेक्टिव) अदृश्य हिस्सा होता है जिसे हम मन कहते हैं। मन मस्तिष्क में वैसे ही स्थापित हुआ आता है जैसे कंप्यूटर या मोबाइल फोन में डिफॉल्ट मोड आता है। इस अदृश्य अहसास को न्यूरो इंजीनियरिंग में डिफॉल्ट मोड नेटवर्क कहते हैं। इस नेटवर्क में एक क्षण का भी ठहराव नहीं होता है। यह नींद में भी दौड़ता रहता है और जागने के समय में कोई 30-47 प्रतिशत समय इधर -उधर अपनी मर्जी से घूमता रहता है। इस घुमक्कड़ी को माइंड वांडरिंग (मन का घुमक्कड़पन) कहा जाता है। अति आधुनिक न्यूरोसाइंटिस्ट लोगों द्वारा माना जाता है कि यदि इस घुमक्कड़ी को गहनता और विस्तार से समझ लिया जाय तो मन की लगाम कुछ हद तक पकड़ में आ सकती है। मन को शत प्रतिशत नियंत्रित करना असंभव है और ऐसा करने का प्रयास ऊर्जा को व्यर्थ करना ही होगा।

हमारा मन अवधारणा, ध्यान, विचार, मनोदशा और ग्रहणशीलता में से किसी न किसी अवस्था में हर क्षण बना रहता है। ऐसे में हम दूसरे व्यक्ति के मन को पढ़ने की कोशिश करते हैं। जरा कल्पना कीजिए कि आपके सामने आपका नजदीकी दोस्त किसी को किसी शाम कहीं पर पार्टी के लिए आमंत्रित करता है तो आपके लिए यह जानना काफी कठिन हो जाता है कि क्या आप स्वत: ही आमंत्रित हैं? क्या आप बिन बुलाए मेहमान तो नहीं बन

डॉ. रामावतार शर्मा

रहे हैं? आपके पूछने पर दोस्त को बुरा तो नहीं लगेगा? मन जब कल्पनाएं करता है तो वे अनंत और असंख्य हो सकती हैं। इस घुमक्कड़पन की कोई सीमा नहीं है।

मन का यह व्यवहार ही दिवास्वप्न दिखाता है, भविष्य की चिंताओं में घिरने देता है और अपने आप से बातें करवाता है। वर्तमान से दूर हो जाने से मानसिक कष्ट हो सकता है पर यदि कोई मन को जान ले, समझ ले तो जीवन की कई समस्याओं का समाधान भी मिल सकता है।

भ्रमणशील मन आर्थिक रूप से जीवनपर्यंत संघर्ष में रहने वाले व्यक्ति को भी यह भ्रम दे देता है कि वह अकेला ही धनाढ्य वर्ग का रक्षक है। मन की इस वाचालता को बुद्धि और विवेक से ही समझा जा सकता है। जो समझ जाता है वह अपने मन को कुछ निर्देश देने में सक्षम हो सकता है। यही क्षमता उस व्यक्ति के जीवन को संवारती है।

मन जंगल के जीव जैसा होता है जिसे स्वतंत्र विचरण में ही आनंद आता है और जो बांध कर रखने पर अपनी मौलिकता खो देता है। चाहे कोई ज्ञानी ध्यानी कितना ही दावा करे पर मन की घुमक्कड़ी को रोक नहीं सकता है। मनोविज्ञान, न्यूरोसाइंस एवम् स्वभाव विज्ञान के अनुसार मन को दबाना नहीं समझना पड़ता है। यदि मन को चेतना की सहायता से समझ लिया जाए तो इसको सार्थक दिशा की तरफ मोड़ा जा सकता है।

हम अक्सर ऐसा करते भी रहते हैं पर शायद जानते नहीं हैं। हम हमारे बहुत से निर्णयों की सफलता का श्रेय समाज, सरकार, नेता, पंडित, मुहुर्त, धर्म, जाति या ईश्वर कृपा को देते रहते हैं पर अध्ययन बताते हैं कि सफलताओं के पीछे मन को चेतना द्वारा निर्देश देना ही होता है। मन को तो बस समझना पड़ता है पर ज्यादातर लोग उसे समझाते रहते हैं। मन के बारे में मोशे बार नामक प्रसिद्ध कंप्यूटर विज्ञानी, बायोमेडिकल इंजीनियरिंग विशेषज्ञ ने एक पुस्तक लिखी है जिसका शीर्षक है; माइंड वांडरिंग; जो मानव मन को समझने में बहुत सहायक हो सकती है।

- डॉ. रामावतार शर्मा,
चिकित्सक एवं लेखक

डी.एल.एड परीक्षा का टाइम टेबल जारी

बीकानेर, (कासं)। डिप्लोमा इन एलीमेंट्री एज्यूकेशन (डीएलएड) के सेकंड इयर के एग्जाम दस नवम्बर से शुरू होंगे और 19 नवम्बर तक चलेंगे। इस दौरान सिर्फ एक रविवार का अवकाश रहेगा, जबकि शेष दिन लगातार एग्जाम तय किए गए हैं। इससे स्टूडेंट्स में आक्रोश है कि एग्जाम में एक से दो दिन का अंतराल होना चाहिए था। पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षाएं ने टाइम टेबल जारी किया है। इसके मुताबिक सेकंड इयर के रेगुलर, सप्लीमेंटरी सहित सभी तरह के स्टूडेंट्स इसमें हिस्सा लेंगे।

- **दस नवंबर से 19 नवम्बर तक होंगे सभी नौ पेपर**
- **हर रोज होगा एक एग्जाम, सिर्फ एक छुट्टी**

पहले दिन दस नवंबर को बच्चे और सीखना विषय का एग्जाम होगा। जबकि 11 नवंबर को विद्यालय प्रबंधन, संस्कृति और शिक्षण, 12 नवंबर को आधुनिक विश्व में विद्यालय शिक्षा का एग्जाम । 13 नवम्बर को रविवार का अवकाश रहेगा। इसके बाद 14 नवंबर को हिन्दी भाषा शिक्षण एवं प्रवीणता, 15 नवंबर को अंग्रेजी भाषा शिक्षण और प्रवीणता, 16 नवंबर को गणित, 17 नवंबर को तृतीय भाषा का एग्जाम होगा। 18 नवंबर को स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा तथा 19 को सामाजिक शिक्षण का एग्जाम होगा। एग्जाम का समय सुबह ग्यारह बजे से दो बजे के बीच रहेगा। राज्य के दो सौ से ज्यादा डीएलएड कॉलेज में एक साथ एग्जाम होंगे। हर रोज एग्जाम होने से स्टूडेंट्स में नाराजगी है। हर रोज एग्जाम होने से स्टूडेंट्स को तैयारी का अवसर कम मिल पा रहा है।

''राजस्थान के प्रचलित लोक नृत्य'' पुस्तक का विमोचन

उदयपुर, (निसं)। सूचना एवं जनसंपर्क निदेशक पुरुषोत्तम शर्मा ने सोमवार को निदेशालय में पूर्व संयुक्त निदेशक पन्नालाल मेघवाल की राजस्थान के प्रचलित लोक नृत्य पुस्तक का विमोचन किया।

- **मेघवाल ने लोक कलाकारों, लोक गायकों एवं लोक वादकों से साक्षात्कार कर पुस्तक का लेखन किया है**

लेखक पन्नालाल मेघवाल ने राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय लोक कलाकारों, लोक गायकों एवं लोक वादकों से उनके घर, आंगन, चौपाल में उनसे साक्षात्कार कर पुस्तक का लेखन किया है। पुस्तक लोक नृत्य, लोक गायन एवं लोक वादन के मनमोहक चित्रों के साथ प्रकाशित है। राजस्थान की कला एवं संस्कृति संबंधित यह पुस्तक प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले परीक्षार्थियों के लिए उपयोगी है।

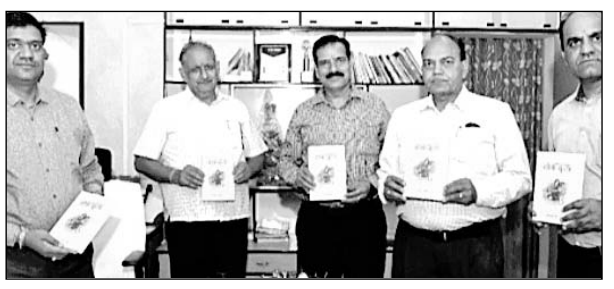

निदेशालय में पूर्व संयुक्त निदेशक पन्नालाल मेघवाल की पुस्तक का विमोचन करते सूचना एवं जनसंपर्क निदेशक पुरुषोत्तम शर्मा।

पुस्तक का प्रकाशन राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर से हुआ है।

इस अवसर पर अतिरिक्त निदेशक अरुण जोशी, वित्तीय सलाहकार सुभाष दानोदिया, संयुक्त निदेशक शिव चंद मीणा, जनसंपर्क अधिकारी आशीष जैन, निजी सचिव रवि पारीक उपस्थित थे।

दीपावली पर्व के लिए मिट्टी के दीपक बनाने में जुटे कुंभकार

पावटा, (निसं)। दीपों के पर्व दीपावली में अभी भले ही 3-4 दिन का समय है लेकिन रोशनी के पर्व को लेकर कुंभकार समाज के लोग इन दिनों मिट्टी के दीए बनाने में व्यस्त है और दीपक बनाने में पूरा परिवार दिन-रात मेहनत करता नजर आ रहा है।

ऐसी मान्यता है कि दीपावली की रात धन की देवी लक्ष्मी भ्रमण करती है। लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए लोग घर, दुकान व प्रतिष्ठानों में दीए जला कर रोशन करते हैं। हालांकि पुरानी मान्यताओं के चलते घरों में कम से कम पांच मिट्टी के

दीपक बनाते हुए कुंभकार

- **पावटा में दीपक बनाने के काम में पुरा कुंभकार परिवार लगा हैं**

दीपक लगाने की परंपरा आज भी जीवंत है। दीपावली पर्व का जितना इंतजार नगरवासियों को उससे कहीं ज्यादा इंतजार कुंभकार समाज को होता है।

बिहारी, रामेश्वर, रामोतार, मनोज, प्रहलाद, बाबूलाल, मातादीन, रमेश, जयराम कुम्भकार बताते हैं कि वह अकेले इस काम में नहीं जुटते, बल्कि उनके साथ परिवार के अन्य सदस्य भी हाथ बंटाते हैं। ये लोग चक्के पर मिट्टी रखकर उसे आकार देते हैं और घर के अन्य सदस्य इन दीपों को पकाने में मदद करते हैं तो कोई मिट्टी गूंदने में लगा है, तो किसी के हाथ चाक पर मिट्टी के दीपकों को आकार दे रहे हैं। महिलाओं को पके हुए बर्तन को व्यवस्थित रखने का जिम्मा सौंपा गया है। महिलाएं विभिन्न रंगों से मिट्टी के बर्तनों को सजाने में जुटी हुई हैं।

लगभग हजारों की कीमत में आने वाला चाक का पहिया बडी मेहनत से पत्थर के कारीगरों द्वारा तैयार किया जाता है लेकिन कुछ लोगों के पास अब इलेक्ट्रिक चाक है जिसमें मेहनत कम लगती है। चाक पर अंगुलियां घुमते ही दीपक, मटका, घडा, करवा, गुल्लक सहित कई अन्य उपकरण तैयार हो जाते हैं। मिट्टी के दीए बनाने के लिए ये लोग एक माह पहले से ही तैयारी करने लगते हैं। दूर-दूर से मिट्टी लाते हैं। उन्हें आकर देते हैं, फिर पकाते हैं, कई बार दीपक बेकार हो जाते है, दिन-रात वे मेहनत करते है । इन दीए की कीमत चाइनीज दियों से भी कम होती है। इस साल दीपों का त्योहार मिट्टी के दीपक जलाकर ही मनाएं।

लुटाना मंगनी गांव में पेयजल संकट गहराया

सादुलपुर, (निसं)। राजगढ तहसील के गाँव लुटाना मंगनी में जलदाय विभाग की अनदेखी के चलते गत कई महिनों से पीने के पानी की भयंकर किल्लत बनी हुई है। जिससे आम ग्रामीण, विशेषतोर से महिलाएं बहुत परेशान हो रही हैं।

ग्रामीण राजवीर सहारण, जगमाल गढ वाल, नरेश गढ वाल, संदीप गढ वाल, महेन्द्र पूनियां, राजकुमार पूनियां, प्रेमराज शर्मा, संजय गढ वाल आदि ने बताया कि हमारा गाँव लुटाणा मंगनी आपणी पेयजल योजना से जुडा हुआ है, जिसमें सप्ताह में लगभग एक बार ही पानी की सप्लाई की जाती है, जिसके कारण महिलाएं अपना आवश्यक कामकाज छोडकर पानी आने का इंतजार करती रहती हैं। हांलाकि महिलाएं पानी के जुगाड के लिए सार्वजनिक नल पर अपने-अपने खाली मटकों को लाईनों में कतार से लगाकर पानी की सप्लाई आने का इंतजार करती है।

साथ ही बताया कि पेयजल संकट गहराने के कारण लोग पेयजल आपूर्ति हेतु मंहगे दामों में पानी के टैंकर डलवाने को मजबूर हो रहे है, मगर इस संबन्ध में जलदाय विभाग के अधिकारी व कर्मचारी कुभकर्णी नींद सोये हुए है। इस बारे में ग्रामीणों ने कहा कि अगर शीघ्र ही पेयजल व्यवस्था में सुधार कर सप्लाई को नियमित नहीं किया गया तो ग्रामीणजन आदोलन करने को मजबूर होंगे।

पेयजल संकट गहराने के दौरान पानी के जुगाड़ के लिए गांव में लगी मटकों की लम्बी कतार।

दीपावली: पांच दिन उत्सव और पर्व

भारतवर्ष के अंदर दीपावली पाँच दिन का पर्व और उत्सव को कार्तिक कृष्णा तेरस से कार्तिक शुक्ल दूज तक हर्षोल्लास के साथ धूमधाम से मनाया जाता है । उल्लेखनीय महाराष्ट्र में दिवाली का पर्व छह दिनों तक मनाया जाता है यहां दिवाली वासु बरस या गौ वास्ता द्वादशी के साथ शुरू होता है और भैया दूज के साथ समाप्त होता है।

पांच दिन के पर्व दिवाली का प्रथम दिन धनतेरस का अर्थ है धन एवं संपत्ति है। धनतेरस को देवताओं के चिकित्सक भगवान धन्वंतरि की जयंती के रूप में मनाया जाता है, पौराणिक मान्यताओं के मुताबिक भगवान धनवंतरी समुद्र मंथन के दौरान अवतरित हुए थे । इस दिन को शुभ मानते हुए लोग बर्तन, सोना-चादीं जेवरात आदि खरीदना शुभ और मंगलकारी मानते हुए इसकी खरीदारी करते हैं। पांच दिन के पर्व दिवाली के दूसरे दिन चतुर्दशी को छोटी दिवाली भी कहते हैं।

कहा जाता है कि ईसी दिन भगवान कृष्ण ने राक्षस नरकासुर को मारा था। नरक चतुर्दशी को बुराई एवं अंधकार पर अच्छाई एवं प्रकाश की विजय के संकेत के रुप में मनाया जाता है। छोटी दिवाली के दिन लोग अपने घरों के आस-पास बहुत से दीपक जलाते है और घर के बाहर रंगोली बना कर खुशी का इजहार करते हैं।

नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पहले स्नान करने का महत्व गंगा के पवित्र जल में स्नान करने के समकक्ष माना जाता है। पांच दिन के पर्व के तीसरे दिन अमावस्या को दीपावली के रूप में मनाया जाता है इस दिन सभी घरों, व्यापारिक प्रतिष्ठान, कार्यस्थलों, ऑफिसों में धन-संपदा की देवी लक्ष्मी माता की विधि-विधान से पूजा-अर्चना

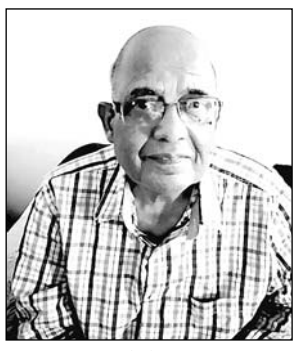

डा. जे.के. गर्ग

की जाती है और विपत्ति-कष्ट के निवारण के लिये प्रथम देव भगवान गणेशजी की भी पूजा की जाती है।

ऐसी मान्यता है कि माता लक्ष्मी घर-परिवार में सुख-समृद्धि प्रदान कर समस्त परिजनों को आशिर्वाद देकर उन पर धन-धान्य की वर्षा करेंगी। नगर, गलियों, घरों, सार्वजनिक जगहों पर दिये की रोशनी से अमावस्या के अंधेरे को शीतल पूर्णिमा की चांदनी में बदल दिया जाता है। पांच दिन के पर्व के चौथे दिन बाली प्रतिपदा और गोवर्धन पूजा के रूप में मनाया जाता है । उत्तर भारत में इसका गोवर्धन पूजा (अन्नकूट) के रूप में मनाया जाता है। भगवान कृष्ण द्वारा इंद्र के गर्व को पराजित करके लगातार बारिश और बाढ से बहुत से लोगों (गोकुल वासी) और मवेशियों के जीवन की रक्षा करने के महत्व के रुप में इस दिन जश्न मनाते है। यह दिन कुछ स्थानों पर दानव राज बाली पर भगवान विष्णु (वामन) की जीत मनाने के लिये भी बाली-प्रतिपदा के रूप में मनाया जाता है।

कुछ स्थानों जैसे महाराष्ट्र में यह दिन पड़वा या नव दिवस (रूप में भी मनाया जाता है और सभी पति अपनी पत्नियों को उपहार देते है। गुजरात में इसको नये दिन के रूप में भी मनाते हैं यह विक्रम संवत नाम से कैलेंडर के पहले दिन के रूप में मनाया जाता है। दिवाली पर्व के पांचवे दिन को .यम द्वितीया या भाई दूज के रूप में मनाते हैं इस दिन को भाए बहनों के अटूट स्नेह बंधन के पर्व में जाना जाता है । आज के दिन यमराज अपनी बहन यामी यमुना से मिलने आये और अपनी बहन द्वारा उनका आरती के साथ स्वागत हुआ और यम एवं यामी ने साथ साथ में खाना भी खाया। यम ने अपनी बहन यामी को अनेकों उपहार भी दिये। लोग यम द्वितीया या भाई दूज को बहन-भाई के पारस्परिक प्रति प्रेम और स्नेह के रूप में मनाते है।

- डा. जे.के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक
कालेज शिक्षा जयपुर

राशिफल गुरूवार 20 अक्टूबर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, आश्लेषा नक्षत्र दिन 10:30 तक, शुभ योग सांय 5:52 तक, विष्टि करण सांय 4:05 तक, चन्द्रमा दिन 10:30 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-तुला, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज ज्वालामुखी योग दिन 10:30 तक है। भद्रा सांय 4:05 तक रहेगी। बुध अस्त पूर्व में प्रात: 8:28 पर होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:57 तक, चर 10:47 से 12:12 तक, लाभ-अमृत 12:12 से 3:01 तक, शुभ 4:26 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:33, सूर्यास्त 5:51

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

धनु

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृष

नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मिथुन

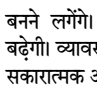

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

तुला

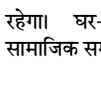

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

कुंभ

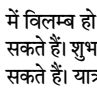

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। घर-परिवार में सामाजिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

वृश्चिक

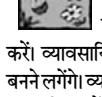

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा।

मीन

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।